"आप प्रचलित विश्वास का विरोध करके देखें, आप निष्कलंक अवतार समझे जाने वाले किसी नायक, किसी महान पुरुष की आलोचना करके देखें। आपके तर्क का जवाब आपको घमंडी कह कर दिया जायेगा। इसका कारण मानसिक जड़ता है। आलोचना और स्वतंत्र ढंग से सोचना क्रान्तिकारी के दो मुख्य अनिवार्य गुण होते हैं। वे महान हैं, इसलिए उनकी कोई आलोचना न करे, वे उससे ऊपर उठ चुके हैं, इसलिए वे राजनीति या धर्म, अर्थव्यवस्था या सदाचार के बारे में कुछ भी कहें तो वह सही होता है। आप मानते हों या न मानते हों, लेकिन आपको यह जरूर कहना पड़ेगा, 'हाँ, यह बात ठीक है।' ऐसी मानसिकता हमें न सिर्फ प्रगति की ओर नहीं ले जाती है बल्कि यह तो स्पष्ट तौर पर प्रतिगामी (मानसिकता) है।"

"एक क्रान्तिकारी सबसे अधिक तर्क में विश्वास करता है। वह केवल तर्क और तर्क में ही विश्वास करता है।"

..... शहीद-ए-आजम भगतसिंह

म.प्र. पाठ्यपुस्तक निगम
विद्या विनय विवेक
आगे